[श्री गिरिराज किशोर कपूर]

शक्तिशाली है कि जिस की कृपा-कटाक्ष मात्र से संसार की उत्पत्ति, पालन और प्रलय आदि सब कुछ हो जाता है। आज हम उसको भूल रहे हैं। जिस देश में, जिस संस्कृति में हम पले हुये हैं, उसकी मर्यादाओं को हम छोड़ रहे हैं। दुख का कारण यही है।

यह तो बड़ा अच्छा हुआ कि आज के युग में हमारे भाई को ऐसा विचार उत्पन्न हुआ। अगर कुछ अर्सा पहले ही यह विचार आ जाते, तो इस देश को कृष्ण नहीं मिल सकता था, इस देश को अरविन्द नहीं मिल सकता था, इस देश को रविन्द्रनाथ टैगोर नहीं मिल सकता था, इस देश को सुभाष बाबू नहीं मिल सकता था, इस देश को भगत सिंह नहीं मिल सकता था, इस देश को बहुत से हमारे भाई जो यहां बैठे हैं, वे भी नहीं मिल सकते थे, और बहुत सी बहनें भी जो यहां बैठी हैं व नहीं मिल सकती थीं।

श्री महेश्वर प्रसाद भार्गव (उत्तर प्रदेश) : कपूर साहब, आप मिलते या नहीं?

श्री गिरिराज किशोर कपूर : मैं भी नहीं मिलता क्योंकि मैं अपने बाप का छठा लड़का हूं। आखिर, यह सब क्यों हो रहा है? क्योंकि हमने रति की गति को नहीं देखा। हमने यह नहीं देखा कि इस संसार के जीवों में मनुष्य नामी जीव कितने हैं। एक पर सेंट भी नहीं हैं। जब ईश्वर ९९ पर सेंट को रिडजस्ट करता रहता है, तो क्या वह १ परसेंट मनुष्यों को रिडजस्ट नहीं कर सकता। मगर आज उसकी शक्ति पर हमें विश्वास नहीं है। आज हमें अपनी बुद्धि पर विश्वास है। मगर मैं बता देना चाहता हूं कि :

थके हैं लाखों ज्ञानी ध्यानी,
न कोई उसको निहार पाया।
अपार माया है प्यारे भगवन्,
कभी किसी ने न पार पाया।

मगर पाया किसने? जिसने रति की गति को समझा और उसे समझने के लिये हमें दुनिया की इस खुली किताब के एक-एक पन्ने को पढ़ना पड़ेगा।

हम मनुष्य हैं। संसार में और भी मनुष्य हैं। हमारी संस्कृति कहती है कि कर्मों के अनुसार जीवों का जन्म होता है। अब हम अपनी किताब को पढ़ें। वह भी जीव है जो सुबह ही सुबह मैले की टोकरी सिर पर उठाता है। वे भी मनुष्य हैं जो अंधे हैं, लंगड़े हैं, काने हैं। वे भी मनुष्य हैं जिन के रोम-रोम में कोढ़ बलबला रहा है और कीड़े पड़ रहे हैं। आखिर, हमारे कर्म बहुत अच्छे होंगे। कर्म में हमारा विश्वास था। धर्म में हमारा विश्वास था। संस्कृति पर हमारा विश्वास था। हमारा विश्वास था कि एक ईश्वर है, उसके नाम अनेक हो सकते हैं, उसके रूप अनेक हो सकते हैं, उसके मंदिर अनेक हो सकते हैं, उसके मंदिरों में प्रतिमाएं अनेक हो सकती हैं, बिना प्रतिमा के मंदिर हो सकते हैं, और हमारे पढ़ने के ग्रंथ अलग अलग हो सकते हैं।

THE DEPUTY CHAIRMAN: You may continue later. Minister of Parliamentary Affairs.

ANNOUNCEMENT *RE.* GOVERNMENT BUSINESS THE MINISTER OF COMMUNICATIONS

AND PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI SATYA NARAYAN SINHA): Madarn, win your permission, I rise to announce that Government Business in this House during the week commencing 21st December, 1964, will consist of:

(1) Consideration and passing of the following Bills, as passed by Lok Sabha: The Payment of Wages (Amendment) Bill, 1964. The Foreign Exchange Regulation (Amendment) Bill, . 1964. The Standards of Weights and Measures (Amendment) Bill, 1964. (2) Consideration and return of ' the following Bills, as passed by Lok Sabha: The Appropriation (Railways) No. 3 BUI, 1964.